विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

वर्ष : 4 अंक: 14 जून, 2011

विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद की द्वितीय बैठक

महामहिम श्रीमती प्रनीत कौर एवं मॉरीशस गणराज्य के प्रधान मंत्री माननीय डॉ. नवीनचंद्र रामगुलाम

विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद की द्वितीय बैठक 16 मई, 2011 को दोमैन ले पाई, मॉरीशस में संपन्न हुई। सचिवालय के नियमों के अनुसार शासी परिषद की इस बैठक की सह-अध्यक्षता मॉरीशस के शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी तथा भारत सरकार की विदेश राज्य मंत्री महामहिम श्रीमती प्रनीत कौर जी ने की।

मॉरीशस सरकार की ओर से शासी परिषद में दो अन्य महत्वपूर्ण सदस्य-मंत्री माननीय डॉ. अरविंद बुलेल, विदेश, क्षेत्रीय एकीकरण एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मंत्री तथा माननीय श्री मुखेश्वर चुनी कला एवं संस्कृति मंत्री ने बैठक में अपनी सक्रिय भागीदारी दी। मॉरीशस सरकार की ओर से शासी परिषद में नामित दो हिंदी विद्वानों श्री सत्यदेव टेंगर व श्री अजामिल माताबदल के अतिरिक्त उपरोक्त तीनों मंत्रालयों के वरिष्ठतम अधिकारी स्थायी सचिव श्रीमति ओबीलक, श्री कुंजल, श्री गणेश, श्री नौबत भी बैठक में उपस्थित हुए।

दूसरी ओर भारत सरकार की ओर से अनेक वरिष्ठ अधिकारियों का एक महत्वपूर्ण प्रतिनिधिमंडल इस बैठक में भाग लेने हेतु महामहिम श्रीमती प्रनीत कौर के साथ मॉरीशस आया था। इनमें विदेश मंत्रालय से संयुक्त सचिव श्री तरनजीत सिंह सन्दु, संस्कृति मंत्रालय से संयुक्त सचिव श्री संजीव मित्तल व मानव संसाधन विकास मंत्रालय के प्रतिनिधि स्वरूप, केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. के. बिजय कुमार, भारत सरकार की ओर से शासी परिषद में नामित हिंदी विद्वान डॉ.रत्नाकर पांडेय सम्मिलित थे। इनके साथ ही भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री मधुसूदन गणपति, उप-उच्चायुक्त श्री प्रशांत पीसे तथा विदेश राज्य मंत्री के निजी सचिव श्री के. ए. पी. सिन्हा बैठक में उपस्थित हुए।

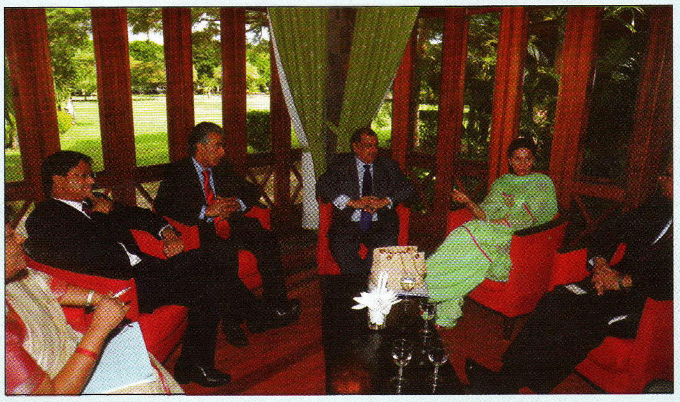

दाएँ से महामहिम श्री मधुसूदन गणपति, महामहिम श्रीमती प्रनीत कौर, माननीय डॉ.वसंत कुमार बनवारी, माननीय डॉ. अरविंद बुलेल, माननीय मुखेश्वर चुनी एवं श्रीमती प्रेमिला ओबिलक

महामहिम श्रीमती प्रनीत कौर एवं मॉरीशस गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम सर अनिरुद्ध जगन्नाथ

विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने संस्था का प्रतिनिधित्व किया।

कार्यों का प्रारंभ सह-अध्यक्षों के वक्तव्य द्वारा हुआ। भारतीय प्रतिनिधिमंडल का स्वागत करने के उपरांत माननीय डॉ.वसंत कुमार बनवारी जी ने कहा :

''आज कुछ आवश्यक निर्णय लेने के लिए शासी परिषद की बैठक लग रही है जो विश्व हिंदी सचिवालय के कामकाज के लिए महत्वपूर्ण होंगे। यह भारत और मॉरीशस सरकारों का एक संयुक्त उद्यम है। सचिवालय की स्थापना 2002 में एक अधिनियम के पारित होने से हुई थी ताकि हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में बढ़ावा दिया जा सके और संयुक्त राष्ट्रसंघ की आधिकारिक भाषा के रूप में इसे मान्यता दी जा सके।

संयुक्त पत्रकार सम्मेलन

मॉरीशस में हमारे पूर्वज़ों ने कठिन परिस्थितियाँ झेलकर बहुत संघर्ष किए और पैतृक मूल्यों तथा मातृ भाषा को जीवित रखा। 'भाषा गई, तो संस्कृति गई', इस कहावत पर हम पूरा विश्वास करते हैं। हमारी राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली में इन्हीं भाषाओं का पठन-पाठन प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय के स्तर तक होता है और इनमें हिंदी प्रमुख है।

एक समय जब भारत, मॉरीशस तथा प्रवासी देश उपनिवेशवाद की बेड़ियों से मुक्त हो रहे थे, तब सर शिवसागर रामगुलाम जी ने हिंदी को वैश्विक भाषा बनते देख लिया था। उन्होंने एक ऐसी संस्था की नींव रखने का प्रस्ताव रखा था जो वैश्विक स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए कार्यरत रहे तथा भूमंडलीकृत विश्व में उसे न केवल अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में ही मान्यता दिलाने के लिए प्रबंध करे बल्कि वाहन के रूप में उसे बढ़ावा दे ताकि एक ऐसी सभ्यता व संस्कृति की समझ और विस्तार हो सके जिसका मानवता के इतिहास में प्रमुख स्थान रहा है।

मॉरीशसीय प्रतिनिधिमंडल

और इतिहास ने उन्हें सही साबित किया है। आज, 35 वर्ष बाद भारत आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभरकर सामने आया है और विश्व भर के भारतीय प्रवासी वैश्विक अर्थ-व्यवस्था में तेज़ी से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। विदेशों और खास तौर से विकसित देशों में बसे भारतीय आप्रवासियों ने दुर्लभ क्षमता तथा उल्लेखनीय साधन-संपन्नता दिखाई हैं। बहुतों ने महत्वपूर्ण संस्थाओं में शीर्ष स्थान प्राप्त किए हैं और अन्यों ने पेशेवरों, उद्योगपतियों या व्यवसायियों के रूप में भी सफ़लता पाई है। हम आश्वस्त हैं कि बहुत जल्द भारत संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद का एक स्थायी सदस्य बनकर विश्व की एक महाशक्ति के रूप में प्रतिबिंबित होगा। इसलिए हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने के हमारे प्रयास में तीव्रता लानी चाहिए।"

बैठक की सह-अध्यक्षा, भारत सरकार की विदेश राज्य मंत्री महामहिम श्रीमती प्रनीत कौर ने अपने वक्तव्य में कहा :

''विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस के नेता और राष्ट्रपिता स्वर्गीय सर शिवसागर रामगुलाम जी तथा भारत की प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्रीमती इंदिरा गाँधी जी का देखा एक ऐसा सपना था जो मॉरीशस की धरती पर साकार हो रहा है। मॉरीशसवासियों ने अपने पुरखों की धरोहर को बहुत संभालकर रखा है और हिंदी उसका एक बेहद अहम हिस्सा है। इसलिए मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना एक उचित कदम है। हिंदी के महत्व को अब पूरा विश्व समझने लगा है क्योंकि यह आर्थिक ताकत बनकर तेज़ी से उभर रहे भारत की एक प्रमुख भाषा है साथ ही पूरी दुनिया में बसे भारतीयों और भारतवंशियों की भी भाषा है। सिर्फ़ अपने देश में ही नहीं बल्कि विश्व स्तर पर भी हिंदी को मान्यता दिलाने के लिए मॉरीशस भारत के साथ हमेशा कदम से कदम मिलाकर चलता रहा है। विश्व हिंदी सचिवालय में मॉरीशस सरकार की बराबर की सक्रिय भागीदारी उसका एक उदाहरण है। आज हमारे बीच विश्व हिंदी सचिवालय से जुड़े दोनों देशों के सदस्य मंत्रीगण एवं अधिकारीगण उपस्थित हैं, साथ ही दोनों देशों के नामित विद्वान भी उपस्थित हैं। आप सब के सक्रिय सहयोग से सचिवालय तथा हिंदी भाषा को आगे बढ़ाने के हमारे प्रयास को बल मिलेगा।''

सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए दोनों सरकारों को धन्यवाद ज्ञापित किया तथा इस महत्वपूर्ण बैठक के सदस्यों को सचिवालय द्वारा अब तक किये गए कार्यों के बारे में सूचना दी। श्री सुखलाल ने सचिवालय के पूर्व महासचिव डॉ. विनोद बाला अरुण तथा डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र के प्रति भी उनकी उपलब्धियों के लिए आभार प्रकट किया।

भारतीय प्रतिनिधिमंडल

शासी परिषद के सदस्यों ने क्रमशः अनेक विषयों पर गहन विचार-विमर्श के फलस्वरूप अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिए। सचिवालय के भवन का निर्माण संबंधि विषय पर दोनों पक्षों की ओर से कार्यों का जायज़ा लिया गया। सचिवालय का मुख्यालय फ़ेनिक्स में मॉरीशस सरकार द्वारा प्रदान की गई भूमि पर भारत द्वारा निर्मित किया जाएगा। महामहिम श्रीमती प्रनीत कौर ने इस कार्य में तीव्रता लाने के प्रति प्रतिबद्धता दिखाई। सचिवालय की योजनाओं और कार्यक्रमों का कार्यन्वयन, मानव संसाधन संबंधी निर्णय तथा हिंदी व अंग्रेज़ी में विश्व हिंदी सचिवालय के वेबसाइट का निर्माण जैसे विषयों पर भी चर्चा हुई। शासी परिषद ने विशेष रूप से सचिवालय के कार्यों में गति लाने के उद्देश्य से कई प्रस्ताव पारित किए। विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद की अगली बैठक भारत में आयोजित करने का प्रस्ताव महामहिम श्रीमती प्रनीत कौर ने रखा जिसे सभी सदस्यों ने स्वीकार किया।

बैठक के बाद सह-अध्यक्षों ने सम्मत कार्यवृत पर हस्ताक्षर किए तथा दोनों पक्षों के बीच उपहारों व स्मृति-चिह्नों का आदान-प्रदान किया गया। उसके पश्चात दोनों पक्षों ने संयुक्त रूप से पत्रकारों से बातचीत की।

विश्व हिंदी सचिवालय 11 फ़रवरी, 2008 से भारत और मॉरीशस के अटूट संबंधों को और मज़बूत बनाते हुए हिंदी भाषा को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर मान्यता दिलाने तथा संयुक्त राष्ट्र संघ की सातवी भाषा के रूप में दर्जा दिलाने का प्रयास करती आ रही है। भारत सरकार की विदेश राज्य मंत्री महामहिम श्रीमती प्रनीत कौर के शब्दों में ***''आशा करती हूँ कि बैठक के बाद विश्व हिंदी सचिवालय के कामकाज में तेज़ी आएगी तथा हम विश्व-मंच पर हिंदी की भूमिका को व्यापक बनाने और एक दिन इसे संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाने के लक्ष्य को प्राप्त करने में सफ़ल हो पाएँगे।''*** शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी ने आशा व्यक्त की कि इस बैठक के उपरांत सचिवालय अपने कार्यों में गति ला पाएगा।

उपहारों व स्मृति-चिह्नों का आदान प्रदान

शासी परिषद की बैठक से पूर्व महामहिम श्रीमती प्रनीत कौर ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल सहित हिंदी के परम हितैषी गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम सर अनिरुद्ध जगन्नाथ से राष्ट्रपति भवन में भेंट की तथा बैठक के बाद वे प्रधान मंत्री डॉ. नवीनचंद्र रामगुलाम से मिलने गईं। दोनों महानुभावों ने भारत-मॉरीशस संबंध, राष्ट्रपति श्रीमति प्रतिभा देविसिंह पाटिल की मॉरिशस यात्रा तथा संयुक्त योजनाओं के अतिरिक्त विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यों की चर्चा की। महामहिम श्रीमती प्रनीत कौर ने देश के दोनों नेताओं को भारतीय प्रधान मंत्री की शुभकामनाएँ प्रस्तुत कीं।

परिषद की बैठक के उपरांत माननीय डॉ. अरविंद बुलेल, विदेश, क्षेत्रीय एकीकरण एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मंत्री ने महामहिम श्रीमती प्रनीत कौर के सम्मान में भोज दिया तथा शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी ने भारत की विदेश राज्य मंत्री की स्वदेश वापसी से पूर्व उनके सम्मान में रात्रि भोज दिया।

विश्व हिंदी सचिवालय दोनों देशों की सरकार के प्रति विश्व हिंदी समुदाय की ओर से आभार प्रकट करता है। दोनों देशों के महान नेताओं ने सचिवालय की स्थापना करके विश्व स्तर पर हिंदी के लिए नए क्षितिज उभारे हैं तथा आज दोनों पक्ष सतत प्रतिबद्धता से इस संस्था का मार्गदर्शन कर रहे हैं। इस संदर्भ में शासी परिषद की द्वितीय बैठक अत्यंत महत्वपूर्ण रही। बैठक के सफल आयोजन में आधारभूत भूमिका निभाने वाले विश्व हिंदी सचिवालय की तीन उप-समितियों के सदस्य तथा मॉरिशसीय व भारतीय अधिकारियों, श्री सामलाल, श्री वरादन, सुश्री चमन, सुश्री शर्मा व श्री मीमांसक को विशेष आभार।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति, अमेरिका

उपस्थित सदस्य गण

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति, अमेरिका का 15 वाँ अधिवेशन क्लेवलेंड (ओहाओ) में 29-30 अप्रैल, 2011 को संपन्न हुआ। दो दिन के इस अधिवेशन में 150 से अधिक हिंदी प्रेमी सम्मिलित हुए एवं शाम के सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं कवि सम्मेलन में 300 से अधिक हिंदी प्रेमी सम्मिलित हुए थे। इस अधिवेशन ने अमेरिका की भूमि पर हिंदी का नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया है। इस भव्य अधिवेशन में हिंदी प्रेमियों ने दो दिन तक कवि सम्मेलन, हिंदी की यात्रा पर मनोरम नाटक एवं अमेरिका में हिंदी शिक्षण पर ज्ञानवर्धक सत्रों का आनंद उठाया।

शुक्रवार 29 अप्रैल की शाम को क्लेवेलेंड के 60 बच्चों एवं हिंदी युवाओं ने हिंदी भाषा की यात्रा को प्रस्तुत किया जो कि संस्कृत से आरंभ होकर पाली, प्राकृत, ब्रजभाषा, अवधि एवं खड़ीबोली तक जाती है एवं तुलसी, सूर से लेकर छायावादी काव्य से गुज़रती हुई आधुनिक साहित्य तक पहुँचाती है। दर्शकों ने हिंदी के प्रसिद्ध कवियों की छवि देखी, तो उनकी कविताओं की झलक का भी आनंद लिया। कलाकारों ने एक नृत्य नाटिका के माध्यम से हिंदी की यात्रा प्रस्तुत की। यह कार्यक्रम उपस्तित सभी हिंदी प्रेमियों को अचंभित और गर्वोन्नत करने वाला था क्योंकि यह कार्यक्रम अमेरिका में जन्मे एवं पले बच्चों ने किया। उसके पश्चात अमेरिका के 15 कवियों ने काव्य-पाठ किया जो कि दो घंटे तक चला।

शनिवार को स्वागत समारोह के साथ अधिवेशन का शुभारंभ हुआ। अधिवेशन के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष, एवं कवि डॉ. केशरी नाथ त्रिपाठी जी भारत से पधारे थे। उनके संभाषण एवं कविताओं का सबने खूब आनंद लिया। कुछ पुस्तकों के विमोचन के पश्चात अमेरिका में हिंदी शिक्षण विषय पर विभिन्न सत्र आयोजित किए गए जिनमें दस से अधिक विद्वानों ने अपने आलेख प्रस्तुत किए जिनके कुछ विषय इस प्रकार थे- खेल खेल में हिंदी सीखना, हिंदी बोलने के लिए कुछ व्यावहारिक सुझाव, वैश्विक स्तर पर हिंदी का भविष्य एवं अमेरीकी सरकार द्वारा उपलब्ध अनुदान एवं हिंदी शिक्षण के कार्यक्रमों का विवरण। अधिवेशन में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति ने तीन प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित किया जिन पर बड़ी संख्या में हस्ताक्षर किए गए। ये प्रस्ताव भारत सरकार, मीडिया एवं संबंधित संगठनों को भेजे जाने का भी प्रस्ताव रखा गया। ये प्रस्ताव हैं-

(अ) भारत सरकार द्वारा हिंदी को राजभाषा का स्थान दिलवाने का आग्रह।

(आ) अमेरिका में हिंदी प्रशिक्षण का प्रसार।

(इ) अमेरिका की युवा पीढ़ी में हिंदी के प्रति प्रेम जागृत करना।

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति के तत्वावधान में ही डैलस में पहली अप्रैल को आयोजिय कवि सम्मेलन में भारत के बहुचर्चित हास्य कवि डॉ.विष्णु सक्सेना, डॉ.प्रवीण शुक्ल एवं सर्वेश अस्थाना जी ने भाग लिया। जयंत चौधरी ने सभी का स्वागत करते हुए डैलस संभाग की अध्यक्षा श्रीमती निशी भाटिया जी को मंच पर आमंत्रित किया और तत्पश्चात निशी जी ने कार्यक्रम को विधिवत रूप से आरंभ किया। कार्यक्रम का प्रारंभ परंपरागत तरीके से राष्ट्रीय गान, दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना से हुआ। मंच संचालन के लिए निशी जी ने अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति के संयोजक डॉ.नंदलाल सिंह को आमंत्रित किया। नंदलाल जी की वाक्य पटुता और हास्य मिश्रित कथन ने लोगों का खूब मनोरंजन किया और मन मोह लिया।

आज के इस फ़िल्मी युग में जहाँ लोग कौंसर्ट में जाना चाहते हैं जब 800 से भी अधिक लोग कवि सम्मेलन का आनंद लेने आते हैं तो मन असीम आनंद से भर जाता है। डैलस में आज से 26 साल पहले इसका प्रारंभ हुआ था। तब कुछ लोग ही ऐसे कार्यक्रमों में आते थे, पर धीरे धीरे लोग आते गए और कारवाँ बनता गया और आज ये कारवाँ काव्य प्रेमियों के जत्थे में परिवर्तित हो चुका है। नंदलाल जी ने कवि सम्मेलन के आयोजन के सभी स्वयं-सेवियों को धन्यवाद दिया। उसके पश्चात उन्होंने कवियों का परिचय देते हुए उन्हें मंच पर आमंत्रित किया तथा पुष्प गुच्छ से उनका स्वागत किया गया।

कवि सम्मेलन का संचालन डॉ.प्रवीण शुक्ल जी ने किया। उन्होंने श्री सर्वेश अस्थाना जी को मंच पर आमंत्रित किया। सर्वेश जी ने इन पंक्तियों के साथ कार्यक्रम का प्रारंभ किया-

"क्या बताऊँ इस धरती पर कैसा लगता है
इस मिट्टी का ज़र्रा-ज़र्रा अपना लगता है
मंदिर मस्जिद, गिरजा द्वारे चाहे जैसे हो
जहाँ लोग अच्छे होते हैं अच्छा लगता है।"

इसके बाद मंच पर आए डॉ.विष्णु सक्सेना जी। उन्होंने गीत प्रस्तुत किए। उनकी आवाज़ ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। दूसरे चरण में पुन: कवियों के हास्य व्यंग्य ने खूब समाँ बाँधा। अंत में डॉ.विष्णु सक्सेना, डॉ.प्रवीण शुक्ल एवं श्री सर्वेश अस्थाना जी ने मिलकर एक गीत प्रस्तुत किया। इसके पश्चात भारतीय राष्ट्रीय गान से कार्यक्रम समाप्त हुआ। डैलस में आयोजित ये 26 वाँ कवि सम्मेलन था।

उत्तरी अमेरिका में यह संस्था प्रत्येक वर्ष तकरीबन 15 से 17 कार्यक्रम करवाती है। सन् 1980 में डॉ.कुंवर चंद्र प्रकाश सिंह ने अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति की स्थापना की थी तब से लेकर आज तक लोग आते गए और कारवाँ बनता गया। अब इस संस्था की मशाल डॉ.नंदलाल सिंह, डॉ.सुधा ओम ढींगरा और श्री अलोक मिश्र के हाथों में है, जिन्हें इसका आधार स्तंभ कहा जाए तो गलत न होगा। कवि सम्मेलनों का आयोजन, विश्व पत्रिका का प्रकाशन, हिंदी समिति की अनेक नगरों में शाखाएँ स्थापित करवाना, अनेक नगरों में गोष्ठियाँ आयोजित करना एवं अधिवेशन का भी आयोजन करना हिंदी समिति की मुख्य गतिविधियों में से हैं।

प्रस्तुति : रेणू राजवंशी गुप्ता , रचना श्रीवास्तव

आगंतुक-पुस्तिका से कुछ पंक्तियाँ

16 मई, 2011 को विश्व हिंदी सचिवालय की शासी परिषद की द्वितीय बैठक में भाग लेने के लिए भारतीय पक्ष से कई सदस्य मॉरीशस पधारे थे । माननीय सदस्यों ने विश्व हिंदी सचिवालय की आगंतुक-पुस्तिका में अपने उद्गार प्रकट करते हुए सचिवालय के प्रयत्नों की सराहना की और अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त की :

" विश्व हिंदी सचिवालय हिंदी के प्रसार में एक मील का पत्थर साबित होगा, यह मेरी शुभकामना है । "

(संजीव मित्तल, संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)

" विश्व हिंदी सचिवालय हिंदी के प्रसार में एक बड़ा काम कर रहा है । हमारी शुभकामनाएँ। "

(तरनजीत सिंह सन्दु, संयुक्त सचिव (ए.डी.), विदेश मंत्रालय, भारत सरकार)

" दूसरी बार मुझे विश्व हिंदी सचिवालय में आने का अवसर मिला । संकल्पनाएं हैं और चुनौतियां भी हैं । आशा है चुनौतियों का सामना करते हुए सचिवालय आगे तक जाने में सफल होगा । और अभी तक सचिवालय का काम सराहनीय है । "

(प्रो.के.बिजय कुमार,निदेशक,कैंद्रीय हिंदी संस्थान, मानव संसाधन विकास मंत्रालय)

विश्व हिंदी सचिवालय श्री संजीव मित्तल, श्री तरनजीत सिंह सन्दु तथा प्रो. के. बिजय कुमार को हार्दिक धन्यवाद समर्पित करता है। आशा है कि भविष्य में भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में इनका सहयोग मिलता रहेगा।

हिंदू गर्ल्स कॉलेज (मॉरीशस) में हिंदी दिवस

डॉ. बीरसेन जागासिंह

शुक्रवार 6 मई, 2011 को 9 से 12 बजे तक, मॉरीशस में स्थित हिंदू गर्ल्स माध्यमिक विद्यालय में हिंदी दिवस मनाया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि, मॉरीशस के वरिष्ठ रचनाकार और महात्मा गांधी संस्थान के सृजनात्मक लेखन विभाग के पूर्व अध्यक्ष, डॉ. बीरसेन जागासिंह रहे । इसके साथ-साथ हिंदी प्रचारिणी सभा के अध्यक्ष, श्री अजामिल माताबदल, विश्व हिंदी सचिवालय के उप-महासचिव और कार्यकारी सचिव, श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई । महात्मा गांधी संस्थान के वरिष्ठ प्राध्यापक, श्री विनय गुदारी तथा छात्राओं-शिक्षकों के अतिरिक्त बालगोबिन वृद्धाश्रम के कुछ सदस्यगण व श्री सत्य साई पूर्व-प्राथमिक पाठशाला के शिक्षकों के साथ उनके छात्र भी उपस्थित थे ।

कार्यक्रम का आरंभ स्कूल की प्रार्थना तथा दीप-प्रज्वलन के साथ हुआ । इसके पश्चात, कॉलेज की प्रबंधक, श्रीमती शिला गंगूसिंह का वक्तव्य रहा जिसमें उन्होंने नारी सशक्तीकरण, छात्राओं के दायित्व और संतुलित समाज के लिए पुरुषों के सहयोग आदि विषयों पर बल दिया । तत्पश्चात, विद्यालय के संगीत विभाग की ओर से छात्राओं ने 'हिंदी भाषा अनुपम भाषा' पर एक मधुर व रसमयी गीत प्रस्तुत करते हुए उपस्थित लोगों के मन को मोह लिया ।

मुख्य अतिथि, डॉ. बीरसेन जागासिंह ने अपनी ट्रिनिडाड यात्रा के प्रसंग पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि हम मॉरीशसवासी को इस बात की संतुष्टि जतानी चाहिए कि हमने हिंदी भाषा तथा अपनी संस्कृति को बचाए रखा जबकि अन्य देशों में स्थिति काफ़ी गंभीर है । छात्रों को

'हिंदी भाषा अनुपम भाषा' की प्रस्तुति

पुरस्कार वितरण

शुभकामनाएँ देते हुए उन्होंने इस आयोजन के लिए प्रबंधन समिति की भी प्रशंसा की ।

कार्यक्रम को स्मरणीय बनाने हेतु, स्कूल की छात्राओं द्वारा कविता पठन, कहानी पठन, कहानियों की आलोचना, 'शिव ताण्डव नृत्य' आदि प्रस्तुतियाँ रहीं ।

अंत में कहानी पठन/विश्लेषण पर आधारित प्रतियोगिता की विजेता छात्राओं को मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार दिए गए।

छात्राओं द्वारा डॉ. जागासिंह का भी सम्मान किया गया । स्कूल की मुख्याधिष्ठाता, श्रीमती गंगादिन द्वारा धन्यवाद-ज्ञापन हुआ । संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन पाठशाला के हिंदी विभागाध्यक्ष श्री राजेश कुमार उदय द्वारा किया गया ।

हिंदू गर्ल्स कॉलेज, मॉरीशस प्रतिवर्ष विश्व हिंदी दिवस मनाता है। यह विद्यालय केवल अध्ययन-अध्यापन पर ही नहीं बल्कि हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार पर भी ध्यान केंद्रित करता है। हिंदी पठन-पाठन का प्रसार करने के लिए तथा इस भाषा को संचार के रूप में प्रयोग करने के लक्ष्य से

पीढ़ियों के बीच हिंदी का सेतु

यह विद्यालय प्रति वर्ष हिंदी दिवस, प्रतियोगिताओं, नाटक मंचन, कहानी तथा काव्य पाठ आदि गतिविधियों का आयोजन करता है। साथ ही साथ हिंदी के क्षेत्र में आयोजित किसी भी गतिविधि में इस विद्यालय के छात्र सक्रिय रूप से भाग भी लेते हैं। शैक्षणिक उपलब्धियों के साथ-साथ हिंदू गर्ल्स माध्यमिक पाठशाला हिंदी भाषा के प्रसार में भी विशेष रूप से कार्यरत है।

मॉरीशस से विनय गुदारी की रिपोर्ट

विश्व हिंदी समाचार : बहुत जल्द ई-पत्रिका

विश्व हिंदी सचिवालय अपने पाठकों को हर्ष के साथ सूचित करता है कि **'विश्व हिंदी समाचार'** की बढ़ती मांग को ध्यान में रखते हुए, सचिवालय बहुत शीघ्र इसे वर्तमान प्रकाशित रूप के अतिरिक्त, ई-मेल द्वारा **ई-पत्रिका (PDF)** रूप में वितरित करने वाला है ।

सभी पाठकों से विनम्र आग्रह है कि वितरण के लिए अपना तथा मित्रों, संस्थाओं व हिंदी प्रेमियों का **ई-मेल पता** सचिवालय को भेजें।

हमारे ई-मेल हैं-

whsmauritius@gmail.com

whsmauritius@intnet.mu

आइये उत्तरदायित्व बाँट लें...

कुछ सप्ताह पहले की बात है। एक हिंदी अध्यापक मित्र के साथ फ़ेसबुक पर चैट शुरू किया । उसने लिखा "Namaste " मैं ने उत्तर दिया "नमस्ते " । उत्तर आया : "ये गुरुजी लोग हिंदी को लेकर बहुत सीरियस हो गए हैं ! "

बात यहीं पर अटक कर रह गई... साथ में अटक गए गले में कुछेक प्रश्न । हिंदी को लेकर हर एक कितना 'सीरियस' है ? होना चाहिए ? हो सकता है ?

बात यहाँ पर उस मित्र की नहीं है । (उनके लिए देवनागरी में चैट की संभावना कठिन लगी होगी । यह कठिनाई अब भी बहुत लोगों को हो रही है । दूर करने के प्रयास सभी ओर से जारी है । कुछ सहायता आपको इस लिंक पर प्राप्त हो जाएगी : http://aarambha.blogspot.com/2009/09/blog-post17.html)। बात कुछ लोगों की गंभीरता को अधिक और कुछ की कम सिद्ध करते हुए अच्छे-बुरे के मानदंड स्थापित करना भी नहीं है । मानदंड स्थापित करना है प्रयास का और उत्तरदायित्व वितरण का ।

हिंदी समुदाय के साथ संबंध पर गर्व की अनुभूति करते हुए हम में से बहुत लोग अब स्वयं को विश्व हिंदी समुदाय का सदस्य मानने लगे हैं। आँकड़ों, सर्वेक्षणों का हवाला देकर विश्व भर में नब्बे-सौ करोड़ हिंदी जानने वालों की बात करते हैं । विश्व का पहला, दूसरा या तीसरा भाषिक समुदाय होने का दावा करते हैं । प्रश्न यह है कि सौ करोड़ का समुदाय हो जाना उपलब्धि है ?... उत्तरदायित्व ?... अथवा दोनों ? उपलब्धि मात्र मान कर बैठ जाते हैं तो एक स्तर पर, किसी मोड़ पर... सभी में नहीं तो कुछ में एक निष्क्रियता आएगी... उत्तरदायित्व है तो सौ करोड़ के बीच बाँटना पड़ेगा ।

स्पायडरमैन फ़िल्म का एक संवाद मुझे बहुत अच्छा लगता है... With great power comes great responsibility। इस संदर्भ में इसका अर्थ निकालता हूँ तो यही समझ में आता है कि सौ करोड़ की शक्ति के साथ सौ करोड़ के प्रति उत्तरदायित्व भी आता है, सौ करोड़ के प्रति ज़िम्मेदारी, जवाबदेही, गंभीरता का कर्तव्य भी आता है । और वह उत्तरदायित्व सौ करोड़ के बीच, सामर्थ्य के अनुपात में वितरित भी होना चाहिए । वितरित होने का अर्थ वितरित करना नहीं है । अर्थ है कि हर कोई सामने आए और अपने हिस्से की ज़िम्मेदारी उठा ले व उसको पूरा करने के लिए वचनबद्ध रहे ।

तभी जाकर हिंदी को लेकर "ज़्यादा सीरियस" और "कम सीरियस" लोगों के बीच का अंतर मिटेगा ।

असंख्य व्यक्ति, समुदाय, संस्थाएँ सामने आकर अपने-अपने हिस्से का उत्तरदायित्व उठा चुके हैं ।

भारत सरकार के एक मंत्री, तीन मंत्रालयों के वरिष्ठतम् अधिकारियों का एक पूरा प्रतिनिधिमंडल लेकर विश्व स्तर पर हिंदी के प्रचार के लिए कार्यरत संस्था की शासी परिषद की बैठक में भाग लेने के लिए भेजे गए । इधर मॉरीशस के तीन मंत्री, उनका मंत्रालय, सरकारी तंत्र, अधिकारी, उसमें जुटे । दोनों देश एकमत होकर, हिंदी के हित में खड़े हुए । यह उनका उत्तरदायित्व रहा । सचिवालय के अभियान को लेकर उनकी गंभीरता रही ।

भारत में हो रहे कार्यों की गिनती के लिए हमारा सूचनापत्र छोटा पड़ेगा । हिंदी भूमि से दूर हिंदी की नई फ़सल उगाने में लगे सतत सेवियों को, अकेले, अपने बलबूते पर, कई बार अपने खर्च पर साहित्यिक वेबसाइट प्रारंभ करते, उनका संचालन करते पाया गया। संस्थाएँ वार्षिक रूप से गतिविधियाँ, कवि सम्मेलन व अधिवेशन का आयोजन कर रही हैं । "कोपेनहैगन" (ऐसे नाम जिनको हिंदी में लिखना तक कठिन है) जैसे शहरों में हिंदी की साहित्यिक संध्याएँ लग रही हैं । कैलिफ़ोर्निया में हिंदी कविताएँ लोगों को हास्य रस प्रदान कर रही हैं । पिछले पचास वर्षों से हिंदी की सेवा में रत "हिंदी लेखक संघ" के वयोवृद्ध सदस्य अभी भी युवकों वाले उत्साह के साथ संस्था की ओर से साहित्यिक कार्यक्रम कर रहे हैं । सभी कठिनाइयों को झेलते हुए मॉरीशस से लेकर अमेरिका में कवि, कहीं एक तो कहीं एक साथ पाँच, साहित्यिक ग्रंथों का लोकार्पण करवा रहे हैं और ... हिंदू गर्ल्स कॉलिज द्वारा आयोजित कार्यक्रम में आमंत्रित आश्रम के वृद्धों में से एक को इलाके के पूर्वप्राथमिक विद्यालय के बच्चों के एक झुंड के बीच माँ-बाप, बड़े-बुज़ुर्गों का आदर सिखाने वाले कुछ पुराने हिंदी फ़िल्मी गीत गाते हुए सुना गया।

ध्यान से पढ़िए, हमारे विश्व हिंदी समाचार में प्रकाशित ये सूचनाएँ, अथवा देखिए अपने ही ईर्द-गीर्द । पता चल जाता है कि वैश्विक स्तर पर उत्तरदायित्वों का वितरण प्रारंभ हो गया है । सवाल दृष्टिकोण मात्र का है । अकेले एक जगह पर एक छोटे से हिंदी समुदाय के सदस्य का दृष्टिकोण अथवा वैश्विक स्तर पर सौ करोड़ के समुदाय के सदस्य का दृष्टिकोण ? अपने सामर्थ्य अनुसार, कई उससे अधिक भार उठा रहे हैं । कार्य हो रहा है !

परंतु अभी भी कई उत्तरदायित्व बाँटने हैं । साथ ही कुछ उत्तरदायित्वों के प्रति प्रतिबद्धता सुदृढ़ करनी है । इन सभी उत्तरदायित्वों में एक (जिसे हर एक को अपनी जगह उठाना पड़ेगा) यह भी है कि सौ करोड़ के आगे जुड़ने वाली हर नई इकाई ... हर नई ज़ुबान पर पहला अक्षर अपनी इस भाषा का बैठे । माता-पिता, गुरु, पड़ोसी, संस्था, साहित्यकार, पत्रकार या फ़िल्मी हीरो के रूप में...हर नई पौध को विरासत में मिली सौ करोड़ के इस शक्ति से अवगत कराते हुए उसको भी उसके हिस्से का उत्तरदायित्व सौंपना है ।

क्या ये उत्तरदायित्व आप ले सकते हैं ? सामने आइये । परंतु आते हुए सोच लीजिएगा । ये सौ करोड़ के प्रति ज़िम्मेदारी है । इसे कम सीरियस होके नहीं किया जा सकता ।

श्री गंगाधरसिंह सुखलाल
कार्यवाहक महासचिव

संपादक
श्री गंगाधरसिंह सुखलाल
संपादन सहयोग
श्री जिष्णु होरिशरण, सुश्री श्रद्धांजलि हजगैबी
सुश्री प्रीति सियांबर, श्रीमती विजया सरजु
विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फॉरेस्ट साइड, मॉरीशस
World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side, Mauritius
Phone (230) 6761196
Fax (230) 6761224
E-mail : whsmauritius@intnet.mu
sgwhs@intnet.mu
whsmauritius@gmail.com

कोपेनहैगेन में साहित्य संध्या

22 मई, 2011 को डेनमार्क के प्रथम सांस्कृतिक कैफे ट्रांकेबार में वैश्विक समुदाय की संरक्षक श्रीमती पूर्णिमा वर्मन का भव्य स्वागत किया गया जिसमें भारतीय मूल के धार्मिक, सामाजिक और साहित्यिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस कैफे की स्थापना भारतीय मूल के रेडियो कलाकार, प्रोड्यूसर और गज़लकार तथा रेडियो सबरंग के संस्थापक श्री चाँद शुक्ला हदियाबादी तथा मूल रूप से डेनमार्क की निवासी चित्रकार, कवि, लेखक, अनुवाद एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती रिगमोर ने की है। कार्यक्रम का प्रारंभ चाँद हदियाबादी ने डेनमार्क में साहित्यिक गतिधियों के विषय में बताकर किया। उन्होंने रेडियो सबरंग से ट्रंकबार तक की यात्रा के कुछ रोचक संस्मरण को अतिथियों के साथ बाँटा और ट्रंकबार की लोकप्रिय परंपराओं के विषय में बताया जिसमें द्वार से सटी खिड़की में रखे झरने में संजोई गई शुभ मणियों को कैफ़े के अतिथियों द्वारा उठाने और कैफ़े में पहली बार पधारने वाली महिला के गले में एक स्कार्फ पहनाने की मनमोहक परंपराएँ शामिल थीं। उन्होंने रेडियो सबरंग की वेब साइट के नए परिवर्तनों को भी सबके साथ बाँटा।

कोपेनहैगेन निवासी प्रवासी उपन्यासकार एवं कथाकार अर्चना पैन्यूली ने कार्यक्रम का संचालन किया। उपस्थित हिंदी कर्मियों का परिचय दिया और उनसे अपने कार्य में आने वाली समस्याओं, उनके निराकरणों और अपने कार्य अनुभवों के विषय में बोलने के लिए उन्हें आमंत्रित किया। इस अवसर पर सुनीता मंगा, आशा अरोड़ा और कुमुद माथुर ने हिंदी शिक्षण से संबंधित अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रवासी भारतीयों के लिए हिंदी की उपयोगिता बताते हुए उपन्यासकार व कथाकार राजकुमार कोहली ने कहा कि भारतीय मन की संवेदनाओं का जैसा चित्रण हिंदी भाषा में हो सकता है वैसा अंग्रेज़ी या अन्य भाषाओं में नहीं हो सकता। रेडियो प्रोड्यूसर एवं उद्घोषक गुरुदयाल सिंह रमता ने कहा कि दूसरी भाषा से हमें धन समृद्धि सब कुछ मिल जाती है लेकिन अपनी भाषा के छूटते ही हम अपनी सभ्यता, संस्कृति और परंपराओं को खो बैठते हैं।

दूसरे सत्र का प्रारंभ प्रीति सिंह की तीन कविताओं से हुआ। उनके बाद अर्चना पैन्यूली ने अपनी दो कविताओं का पाठ किया। कुमुद माथुर की एक लंबी कविता के बाद सबके आग्रह पर चाँद हदियाबादी की गज़लों ने खूब रंग जमाया। श्रीमती रिगमोर ने पूर्णिमा वर्मन की कुछ रचनाओं के डैनिश अनुवाद का पाठ किया, अंत में पूर्णिमा वर्मन की गज़लों और सुरीले गीतों से संध्या संपन्न हुई।

धन्यवाद ज्ञापन चाँद हदियाबादी ने किया। कार्यक्रम में उपरोक्त वक्ताओं के अतिरिक्त रवि मंगा, रघुनाथ माथुर, कमल घोष, शारदा दुलानी, सत्यदेव चतुर्वेदी, ज्योति पैन्यूली, कमल कोहली, प्रवीण सक्सेना और दिनेश शर्मा भी उपस्थित थे।

दिनेश शर्मा, डेनमार्क

सूरीनाम में पुस्तकों का लोकार्पण

23 जून 2011 को सूरीनाम में माता गौरी संस्था में भारत के राजदूतावास द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में भारत के राजदूत श्री कंवलजीत सिंह सोढ़ी द्वारा नई दिल्ली की प्रकाशन संस्था साहित्य मंडल के 14 हिंदी बाल कहानियों के सचित्र और सुरुचिपूर्ण सेट का लोकार्पण किया गया। राजदूतावास की हिंदी अधिकारी श्रीमती भावना सक्सैना द्वारा पुस्तकों का परिचय पढ़े जाने के पश्चात लोकार्पण के लिए पुस्तकें सूरीनाम साहित्य मित्र संस्था की सचिव पंडिता सुशीला बलदेव मल्हू ने प्रस्तुत कीं।

बहुरंगी चित्रों से सुसज्जित पुस्तकों की लेखिका हैं श्रीमती धीरा वर्मा और इन पुस्तकों के चित्रकार हैं संजय अहलुवालिया। पेयर इट सीरीज़ के इस सेट की सभी कहानियाँ अंग्रेज़ी अनुवाद में भी उपलब्ध हैं। अंग्रेज़ी अनुवाद सुनंदा वी अस्थाना द्वारा किया गया है। यह हिंदी शिक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण सेट है जिसके द्वारा अंग्रेज़ी के माध्यम से हिंदी सीखी जा सकती है।

चौदह कहानियों के इस सेट में निम्न पुस्तक उपलब्ध हैं-
1.चतुर पीटर, 2.सूरज और चाँद, 3.बाघ आया बाघ आया, 4.सिद्धार्थ, 5.ग्वाला भैया, 6.अर्जुन, 7.मोनिका, 8.बहू की खोज, 9.चाणक्य, 10.सेरको सवा सेर, 11.कंकड़ की सब्ज़ी, 12.बुद्धीमान बीरबल, 13.सुखी कौन तथा 14.पंडीतजी ।

धीरा वर्मा लेखिका संघ की उपाध्यक्ष हैं और पिछले चार दशकों से बाल-साहित्य पर काम कर रहीं हैं। वे दिल्ली विश्वविद्यालय के स्लावोनिक और फ़ीनो-उग्रीयन विभाग में अतिथि प्राध्यापक हैं और भारत के वरिष्ठम बल्गारियन अनुवादकों में से हैं। उनकी अनेक बल्गारियन साहित्यिक रचनाओं के अनुवाद प्रकाशित हुए हैं। धीराजी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान में एम.ए. की उपाधि पाई हैं। साथ ही साथ उन्होंने दिल्ली के बाल कल्याण परिषद के 'पालना' में सलाहकार मनोवैज्ञानिक के रूप में सेवा की है। आकाशवाणी पर उनकी सौ से अधिक वार्ताएँ प्रसारित हुई हैं।

सूरीनाम से भावना सक्सैना
सृजनगाथा

हिंदी लेखक संघ, मॉरिशस 50 वीं वर्षगांठ

हिंदी भाषा एवं साहित्य के प्रचार-प्रसार में लगे मॉरीशसीय संस्थाओं में हिंदी लेखक संघ का विशिष्ट स्थान है। इस संदर्भ में वर्ष 2011 हिंदी लेखक संघ का साहित्यिक वर्ष घोषित किया गया है। इस वर्ष मॉरिशस स्थित हिंदी लेखक संघ अपनी 50 वीं वर्षगांठ मनाने जा रहा है।

मॉरीशस के उभरते हिंदी लेखकों को एक मंच प्रदान करने तथा उनका एक संघ की स्थापना करने के उद्देश्य से स्वर्गीय डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणी जी ने हिंदी लेखक संघ की स्थापना की थी। 9 दिसंबर 1961 को मॉरीशस के अनेक लेखकों ने डॉ. चिंतामणी जी के आमंत्रण के फलस्वरूप पोर्ट लुईस स्थित नेओ कॉलेज में अपनी उपस्थिति दी थी। चिंतामणी जी ने उन्हें संबोधित करते हुए कहा था - "मॉरीशस में हिंदी साहित्य का यह शैशवकाल है। संघ का मुख्य उद्देश्य व्यवस्थित रूप से साहित्य-सृजन करना है। निकट भविष्य में अनेक लेखक, कवि, कहानीकार, उपन्यासकार तथा अनेक साहित्यकार पैदा करना है। मॉरीशस का गौरव लेखकों पर निर्भर है। वे देश के दीप-स्तंभ हैं।"

मॉरीशस हिंदी लेखक संघ की स्थापना उसी दिन अर्थात 9 दिसंबर 1961 को हुई। पहली कार्य समिति का गठन हुआ। मान्य प्रधान बने पं. बालमुकुंद द्विवेदी, प्रधान पं. धर्मवीर घूरा, महामंत्री डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणी तथा कोषाध्यक्ष का पद श्री हनुमान दुबे गिरधारी को सौंपा गया। देश के प्रथम प्रधान मंत्री व राष्ट्रपिता सर शिवसागर रामगुलाम 1976 से 1985 में स्वर्गवास तक संघ के संरक्षक रहे। हिंदी लेखक संघ एक छोटी हिंदी संस्था के रूप में स्थापित हुई थी पर उस समय किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि यह संस्था 50 वर्षों से अविरल साहित्य-सृजन करते हुए मॉरीशस की एक बड़ी साहित्यिक संस्था बन पाएगी और अपने अस्तित्व का इतिहास रच पाएगी।

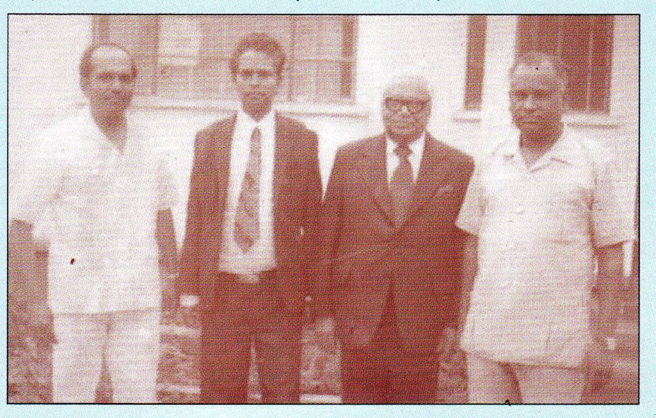

1978 में दाईं ओर से संघ के प्रधान स्वर्गीय पं. धरमवीर घूरा, संरक्षक राष्ट्रपिता स्वर्गीय सर शिवसागर रामगुलाम, महामंत्री इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ, उप प्रधान विष्णुदत्त मधु।

हिंदी लेखक संघ के 50 वर्षों के कार्यकाल में अनेक उल्लेखनीय सृजनात्मक लेखन कार्य हुए एवं साहित्यिक गतिविधियाँ आयोजित हुईं जिनसे मॉरीशस के हिंदी साहित्य प्रेमी भली-भाँति परिचित हैं। साहित्य संगोष्ठियाँ, कवि सम्मेलन, नाटक मंचन, साहित्यिक लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन, पुस्तक प्रकाशन व लोकार्पण समारोह, पुस्तक प्रदर्शनी, 'बाल सखा' पत्रिका का प्रकाशन, 'प्रकाश' नामक पाक्षिक रेडियो कार्यक्रम का प्रसारण तथा कर्मठ हिंदी सेवियों का सम्मान हिंदी लेखक संघ की गतिविधियों के अंतर्गत आते हैं।

संप्रति हिंदी लेखक संघ के प्रधान का पद इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ जी संभाल रहे हैं। संघ द्वारा साहित्य की अनेक विधाओं जैसे कविता, निबंध, कहानी, नाटक, लोक कथा, लघु कथा, इतिहास तथा बाल कहानियों का प्रकाशन हुआ है। इस वर्ष भी साहित्य संगोष्ठी, नाटक मंचन, पुस्तक प्रदर्शनी, रेडियो व टीवी कार्यक्रम आदि प्रस्तावित गतिविधियाँ हिंदी लेखक संघ आयोजित करेगा। इसके साथ ही संघ के संस्थापक दिवंगत डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणी तथा पूर्व प्रधान दिवंगत पं. धर्मवीर घूरा पर आधारित स्मृति ग्रंथों का लोकार्पण होगा।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

राष्ट्रीय हिंदी नाटक समारोह, मॉरीशस : 2011

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी मॉरीशस के कला एवं संस्कृति मंत्रालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय हिंदी नाटक समारोह संपन्न हुआ। इस वर्ष रंगनादन श्रीनिवासन स्टेट सेकेंडरी स्कूल हिंदी ड्रामा क्लब द्वारा प्रस्तुत श्रीमती खेमा रामचरण के "समझौता जीवन से" नाटक को सर्वश्रेष्ठ नाटक घोषित किया गया। शनिवार 11 जून, 2011 को दिन के 11:30 बजे कला एवं संस्कृति मंत्री के सलाहकार श्री राजनारायण गती जी की उपस्थिति में राष्ट्रीय हिंदी नाटक समारोह का यह अंतिम चरण सेर्ज़ कोंस्ताँतें रंगशाला में सैकड़ों दर्शकों के सामने सफ़लतापूर्वक संपन्न हुआ।

अंतिम चरण के लिए तीन प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने वाली टोली के अतिरिक्त दो नाटक चुने गए थे जो इस प्रकार हैं- भारतीय लेखक लक्ष्मीनारायण लाल का 'लंका काण्ड' जो प्रोफ़ेसर वासुदेव विष्णुदयाल हिंदी ड्रामा क्लब की ओर से खेला गया और सुलक्षणा भगीरथी का लिखा 'स्वार्थी संतान' नाटक जो महात्मा गाँधी संस्थान माध्यमिक कॉलेज द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस वर्ष सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार चेतन हजूरी को 'लंका काण्ड' नाटक के लिए मिला। कुमारी दरीना भुवन को 'समझौता जीवन से' नाटक के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार प्राप्त हुआ और श्रीमती खेमा रामचरण इसी नाटक के लिए सर्वश्रेष्ठ निर्देशक चुनी गईं। सर्वश्रेष्ठ स्थानीय लेखक का पुरस्कार सोनंजन चमन को 'अधूरा जीवन' नाटक के लिए मिला।

मॉरीशस में पहली बार 20 सितंबर 1973 में तब के युवा एवं क्रीड़ा मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी नाटक समारोह आयोजित किया गया था। तब से हर साल अन्य भाषाओं के साथ हिंदी नाटक प्रतियोगिताएँ होती आ रही हैं जिनमें हिंदी नाटकों की संख्या ही सब से अधिक होती है।

इस वर्ष प्रारंभिक चरण में तेईस प्रवेश मिले थे जिनमें से उन्नीस मंचित हुए। पिछले दो-तीन वर्षों से इस प्रतियोगिता में कॉलेजों की हिस्सेदारी बढ़ गई है और इस वर्ष तेरह नाटक टोलियाँ कॉलेजों की थीं। मंचित नाटकों का स्तर काफ़ी संतोषजनक रहा है। यदि इनसे फ़िल्मी और टीवी धारावाहिकों का प्रभाव हट जाए और असली मायने में स्थानीय पृष्ठभूमि के आधार पर नाटक लिखकर मंचित किया जाए तो यह मॉरीशसीय हिंदी नाट्य साहित्य के लिए एक ऐतिहासिक बात होगी। एकाध लेखक और रंगकर्मी इस दिशा में कोशिश कर भी रहे हैं। असल में हम इस देश में मंत्रालय द्वारा आयोजित नाटक समारोहों से हटकर भी अपना एक अलग, स्वस्थ और स्वतंत्र रंगमंच देखना चाहते हैं जो दर्शकों और रंगप्रेमियों को स्वत: आकर्षित करे।

इस वर्ष रंगकर्मियों एवं भागीदारों के प्रयत्न सराहनीय रहे जो निर्णायक मंडल के सदसयों- सर्वश्री धनीप्रसाद धनपत, सुरुजदेव जानकी और कुमारदत्त गुदारी की कसौटियों पर खरे उतरकर सफलता प्राप्त कर पाए हैं। सभी को बधाई और शुभकामनाएँ।

सूर्यदेव सिबोरत, मॉरीशस

मास्को में 'यादों के धुंधले-उजाले चेहरे' का लोकार्पण

पद्मश्री प्रो. मदनलाल मधु की नवीनतम पुस्तक 'यादों के धुंधले-उजाले चेहरे' का मास्को में लोकार्पण हुआ। 'हिंदुस्तानी समाज' और 'जवाहरलाल नेहरु सांस्कृतिक केंद्र' के तत्वाधान में इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। हिंदी भाषा और साहित्य के रूसी विद्वानों, अध्यापकों, उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों तथा भारतीयों से भरे हॉल में इस पुस्तक का विमोचन करते हुए स्थानापन राजदूत श्री अनिल त्रिगुनायात ने पिछले पाँच दशकों से अधिक समय में मास्को के साहित्यिक-सांस्कृतिक जीवन, विशेषत: हिंदी साहित्य और भाषा का संक्षिप्त उल्लेख करते हुए कहा कि मधु जी की पुस्तक बहुत रोचक और पठनीय है। इसमें मधु जी के सन् 1957 से पहले के विविध संस्मरण हैं जिनसे भारत के विभाजन से पहले के पंजाब, विशेषत: लाहौर के साहित्यिक-सांस्कृतिक जीवन कि बहुमुखी जानकारी मिलती है।

हिंदी भाषा और साहित्य के रूसी विद्वान अकादमीशियन चेलिशेव ने इस बात पर विशेष बल दिया कि मधु जी ने रूस के महान कवि पुश्किन तथा तोल्स्तोय के 'युद्ध और शान्ति' जैसी कालजयी रचनाओं के साथ ही अन्य कई रचनाओं का अनुवाद करके रूस और भारत के बीच एक साहित्यिक सेतु का निर्माण किया है।

प्रो. मदनलाल मधु, मास्को

''हिंदी और भारतीय भाषाओं का संतुलन अनिवार्य''
अहमदाबाद में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी

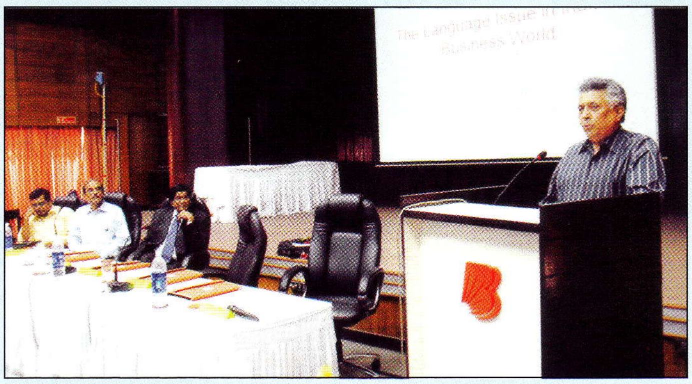

बैंक ऑफ बड़ौदा के स्टाफ महाविद्यालय में 'हिंदी का भविष्य' : 'भविष्य की हिंदी' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस संगोष्ठी में विभिन्न व्यवसायिक, शैक्षणिक एवं मीडिया जगत के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अमेरिका के पेंसिल्वेनिया विश्वविद्यालय के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष एवं भाषाविद डॉ. सुरेंद्र गंभीर ने कहा कि हमें सही मायने में अपना विकास करना है तो अंग्रेजी भाषा के साथ अपनी मातृभाषाओं के ज्ञान का संतुलन स्थापित करना होगा । आपने भारत के भाषायी परिदृश्य को केंद्र में रखते हुए उन्होंने कहा कि वर्ष 2050 तक भारत आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है और सेवा-उद्योग में उसका स्थान महत्वपूर्ण होता जाएगा । किंतु वैश्विक ज्ञान भंडार में उसका योगदान नगण्य होगा, क्योंकि सृजनात्मक व्यक्ति की अपनी भाषा अपने परिवेश की भाषा से सृजित होती है और हमारी भाषाएं हमारी ही उपेक्षा का शिकार हैं । यही कारण है कि विदेशों में विशेषकर अमेरिका में जितनी संख्या में लोग चीनी और जापानी भाषाओं का अध्ययन कर रहे हैं, भारतीय भाषाओं का अध्ययन करनेवालों की संख्या उसका एक प्रतिशत भी नहीं है । यहां तक की उनकी संख्या थाई भाषा के विद्यार्थियों से भी कम है। लंदन में चार दशक तक शिक्षा क्षेत्र में सक्रिय रही श्रीमती कादम्बरी मेहरा ने कहा कि

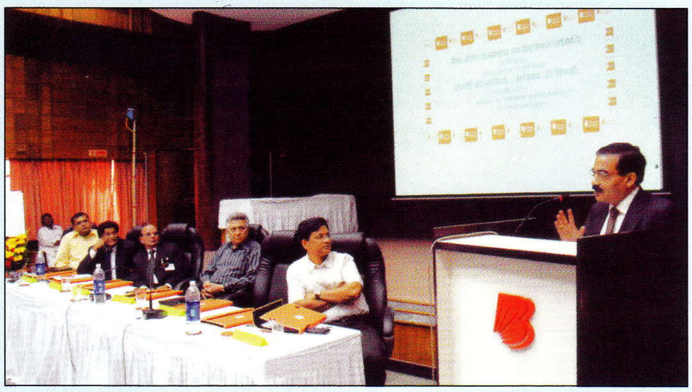

हमने अमेरिका, ब्रिटेन, चीन और जापान की तरह अपनी मातृभाषाओं को राष्ट्रीय अस्मिता का अभिन्न अंग नहीं बनाया । इसीलिए हमारे समाज में विषमताएं भी बढ़ रही हैं । कोलंबिया विश्वविद्यालय की पूर्व प्राध्यापिका डॉ. अंजना संधीर भी विशेष-रूप से उपस्थित रहीं ।

अन्य मनानुभावों ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। टाइम्स ऑफ इंडिया समूह के लोकप्रिय दैनिक 'अहमदाबाद मिरर' के उप संपादक एवं सामाजिक विपणन के विशेषज्ञ डॉ. प्रदीप मलिक ने भाषाओं पर प्रौद्योगिकी के प्रभावों को स्पष्ट करते हुए कहा कि जिस देश की प्रौद्योगिकी का बोलबाला होता है, उस देश की भाषा का प्रभाव भी दुनिया की सारी भाषाओं पर पड़ता है । इस समय प्रौद्योगिकी बहुत तेजी से बदल रही है । इसीलिए भाषा में नित्य नए बदलाव आ रहे है और आनेवाले समय में भाषा के स्वरूप के बारे में अनुमान लगाना भी कठिन हो गया है । इस संगोष्ठी में डी.एन.ए. (भास्कर समूह) के संपादक श्री राजेश परीख, बैंक ऑफ बड़ौदा के महाप्रबंधक श्री एस.के.दास, गुजरात रिफाइनरी के वरिष्ठ प्रबंधक डॉ. माणिक मुगेश, गुजरात विद्यापीठ की हिंदी विभागाध्यक्ष श्रीमती मालती दुबे, ख्यातनाम रचनाधर्मी डॉ. रंजना अरगडे, हिंदी निदेशालय के पूर्व उप निदेशक डॉ. किशोर वासवाणी आदि ने भी भाग किया । इस संपूर्ण कार्यक्रम का संयोजन - संचालन डॉ. जवाहर कर्नावट ने किया ।

प्रेषक : किरण शाह, 41, बापूकृपा सोसायटी, गुरुकुल रोड मेमनगर, अहमदाबाद

'लिखावट' ने आयोजित किया कैम्पस में काव्यपाठ

कविता और विचार के मंच लिखावट तथा भारती परिषद, हिंदी विभाग, मिरांडा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में मिरांडा हाउस में 8 मार्च को हिंदी के वरिष्ठ कवि इब्बार रब्बी की अध्यक्षता में काव्य गोष्ठी का सफ़ल आयोजन हुआ ।

कार्यक्रम में इब्बार रब्बी, अर्चना वर्मा, मिथिलेश श्रीवास्तव, मुकेश मानस, रजनी अनुरागी और मंगलेश डबराल जैसे कवियों ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत की । कार्यक्रम का संचालन चंदा सागर ने किया । कार्यक्रम की शुरुआत रजनी अनुरागी की कविता 'कविता' से हुई । इसके बाद रजनी अनुरागी ने 'औरत', 'नेपथ्य', 'मज़दूरों की बस्ती', 'जन ज्वार' और 'दिल्ली मेट्रो' आदि कविताएँ सुनाईं । रजनी जी के बाद आए कवि मुकेश मानस ने गंभीरता को कम करते हुए कुछ व्यंग्यात्मक रचनाएँ सुनाई जिनमें 'बजाओ ताली' प्रमुख रहीं; इसके अलावा उन्होंने 'भेड़िये', 'भेड़ियाधसान', 'हत्यारा' और 'बेटी का आगमन' जैसी कुछ उल्लेखनीय कविताएँ सुनाई ।

उसके बाद वरिष्ठ कवयित्री अर्चना वर्मा की सुनाई कविताओं 'आसमान पर ताला' और 'मल्लिका शेरावत के नाम' ने गोष्ठी को और ऊँचाई प्रदान की । मिथिलेश श्रीवास्तव की हर कविता ने श्रोताओं के मन पर गहरी छाप छोड़ी। एक तरफ़ 'एक जैसे घर' ने समाज में उपस्थित विसंगतियों की पड़ताल की, तो दूसरी ओर 'कबूतर जैसे हम' ने आम आदमी के मजबूर होने की बात कही साथ ही उन्होंने 'शिविर एक दिन खाली हो गया' जैसी कविता सुनाई जिनसे श्रोतागण निस्तब्ध रह गए । मंगलेश डबराल ने 'छुपम-छुपाई' और 'छुओ' जैसी कविताओं के माध्यम से हृदय की संवेदनशीलता की गहराइयों को छू लिया और 'भूमंडलीकरण' तथा 'टोर्च' जैसी कविताओं के माध्यम से बदलते हुए समाज की तरफ़ इशारा किया ।

कार्यक्रम के अंत में इब्बार रब्बी ने 'घना में पक्षी विहार', 'अरहर की डाल' और 'मधुमेह' जैसी कविताओं से श्रोताओं का न सिर्फ़ मनोरंजन किया बल्कि उन्हें संदेश भी दिए। इसके अलावा उन्होंने 'दुर्गा सप्तशती', 'जब चली रेल', 'कटोरी में वसंत' और 'अंतिम कविता' जैसी कविताएँ सुनाई।

डॉ. सुधा उपाध्याय
हिंद युग्म

कैलिफोर्निया में हास्य कवि-सम्मेलन

बे एरिया, कैलिफोर्निया स्थित उपमा संस्था (उत्तर प्रदेश मंडल ऑफ़ अमरिका) द्वारा 24 अप्रैल को हास्य कवि-सम्मेलन का आयोजन अत्यंत सफ़लतापूर्वक किया गया। हास्य कवि-सम्मेलन में काव्य पाठ करने वाले सभी कवि व कवयित्री स्थानीय थे और उनकी स्वरचित कविताओं ने श्रोताओं का भरपूर मनोरंजन किया।

भारतीय परंपरा के अनुसार दीप-प्रज्वलन से कवि सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। दीप-प्रज्वलन भारतीय दूतावास से आए हुए गणमान्य अतिथि श्री राजेंद्र प्रशाद जी, श्री नरेश निर्वाण जी व बे एरिया की सर्वोच्च संस्था (TIE) के अध्यक्ष श्री विश्व मिश्रा जी द्वारा किया गया। शकुन्तला बहादुर ने दीप-अर्चना संस्कृत श्लोक द्वारा की। तदुपरान्त अध्यक्षा श्रीमती नीलू गुप्ता ने सभी गणमान्य अतिथियों व उपस्थित सज्जनवृंद का उपमा की ओर से स्वागत करते हुए भारतीय दूतावास से आए हुए श्री राजेंद्र प्रशाद जी को कविता पाठ के लिए आमंत्रित किया और फिर कार्यक्रम नरेश निर्वाण जी द्वारा आगे बढ़ा। हास्यरस की कविताओं का यह दौर श्रोताओं को हँसी से लोटपोट करता हुआ संजय माथुर, प्रकाश अग्रवाल, शकुन्तला बहादुर, निर्मल अरोरा, कमल स्याल, अर्चना पांडा, मयंक श्रीवास्तव व नीलू गुप्ता जी द्वारा पूर्ण हुआ।

कवि-सम्मेलन का संचालन बे एरिया की उभरती कवयित्री अर्चना पांडा ने किया तथा अध्यक्षता नीलू गुप्ता ने संभाली । इसके अंतर्गत पति-पत्नी की नोक झोंक, मालकिन और नौकरानी की छींटाकशी, आज के इस युग में कमर तोड़ती महंगाई और नए युग के चलते फिरते प्यार और रोमांस पर भी कविताएँ प्रस्तुत की गईं। सभी श्रोतागण व गणमान्य अतिथियों ने इस कवि सम्मेलन की प्रशंसा की।

श्रीमती नीलू गुप्ता बे एरिया के प्रसिद्ध डी ऐंज़ा कॉलेज में हिंदी की प्रोफ़ेसर हैं और उपमा की संस्थापक अध्यक्षा हैं। वे निरंतर उपमा के कार्यक्रमों के माध्यम से भी हिंदी के प्रचार एवं प्रसार में संलग्न हैं। इसी भावना से ओतप्रोत होली का मंगलमय इंद्रधनुषी पर्व मनाने के पश्चात हास्य कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया।

इस कवि-सम्मेलन का उद्देश्य जहाँ एक ओर अपनी धरोहर का सम्मान और आज के व्यस्त व त्रस्त जीवन को कुछ हल्के-फुल्के हँसी के क्षण देना था, वहीं दूसरी ओर विदेश में आकर बसे हुए भारतीयों की प्रतिभा को प्रोत्साहन देना भी था। अपने भारत से कोसों दूर रहकर भी उसे भुला नहीं पाए हैं, जिनको अपनी मातृभाषा से अत्यंत प्यार है और जो अपनी भाषा हिंदी को जीवित रखते हुए आज की नई पौध को उनकी अपनी मातृभाषा सौंपना चाहते हैं। विदेश में रहते हुए हमें समय पर हास्य कवि-सम्मेलन के साथ अपनी मातृभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए अन्य ठोस कदम भी मिलकर उठाने चाहिए। बूँद-बूँद से घड़ा भरता है और आज तो भारत की आर्थिक व्यवस्था सुदृढ़ होने के साथ-साथ हिंदी का सूरज भी विदेशों में चमक रहा है। यदि हम सब हिंदी-प्रेमी कटिबद्ध होकर प्रयत्न करें तो वह दिन दूर नहीं जब घर-घर में हिंदी बोली जाएगी और हम भारतीय अपनी मातृभाषा हिंदी पर गर्व कर सकेंगे।

शकुन्तला बहादुर

हिंदी संगठन द्वारा आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में रॉयल कॉलेज क्यूर्पिप की विजेता टोली

हिंदी संगठन द्वारा देश की माध्यमिक पाठशालाओं के विद्यार्थियों के लिए आयोजित राष्ट्रीय हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का अंतिम चरण शुक्रवार 10 जून, 2011 को मॉरीशस आर्य रविवेद प्रचारिणी सभा, पोर्ट लुइस में आयोजित किया गया । इस प्रतियोगिता में रॉयल कॉलेज क्यूर्पिप की जीत हुई जहाँ से फ़ोर्म 4 के तीन छात्र शिव गजाधर, तेजस सिवराज़ तथा नितेश कुमार किसुन फ़ाइनल तक पहुँचे थे।

इस वर्ष लगभग 64 माध्यमिक पाठशालाओं ने इस हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भाग लिया। फ़ाइनल तक पहुँचने वाले कॉलेजों में से प्रथम स्थान पर रॉयल कॉलेज क्यूर्पिप आया। दूसरे स्थान पर प्लेन दे पापाय ग्राम के कोस्मोपोलिटन कॉलेज की छात्राएँ, तीसरे स्थान पर त्रियोले स्थित इंटरनेशनल कॉलेज और चौथे स्थान पर सर लेकराज़ तिलक एस.एस.एस. की टोली आई।

रॉयल कॉलेज क्यूर्पिप के विजेता छात्रों को 15,000 रुपए नकद, पुस्तकें तथा एक ट्रॉफ़ी प्रदान किए गए। कोस्मोपोलितन कॉलेज की छात्राओं को 10,000 रुपए और इंटरनेशनल कॉलेज के छात्रों को 5,000 रुपए की पुरस्कार राशि दी गई। सर लेकराज़ तिलक एस.एस.एस. के छात्रों को सांत्वना पुरस्कार भी प्रदान किया गया। हिंदी संगठन के अध्यक्ष श्री राजनारायण गति के अनुसार 'मॉरीशस वासियों के बीच भारतीय भाषा एवं संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना हमारा उद्देश्य है।' उनके शब्दों में : 'हिंदी संगठन प्रतिवर्ष छात्रों के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करता है। हमारा लक्ष्य हिंदी का प्रचार-प्रसार करना है। कुछ छात्र स्कूल में हिंदी का पठन-पाठन तो करते हैं लेकिन हिंदी भाषा में अभिव्यक्ति करने में उन्हें कठिनाई होती है। इन छात्रों ने अपने स्कूल में जो कुछ भी सीखा है उसका प्रयोग इन गतिविधियों के माध्यम से कर सकते हैं।'

इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए संगठन द्वारा इस वर्ष गतिविधियों का एक विशेष समृद्ध कैलेंडर तैयार किया गया है। वर्तमान में एक नाटक प्रतियोगिता एवं संगीत प्रतियोगिता भी राष्ट्रीय स्तर पर चलाई जा रही हैं ।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

श्री राज हीरामन की पाँच पुस्तकों का विमोचन समारोह

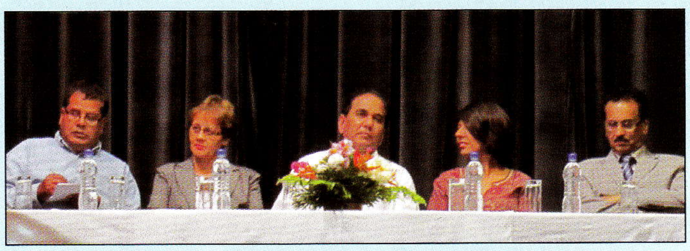

दाएँ से श्री प्रेमचंद बुझावन, माननीय नीता धीरपालसिंह, माननीय अनिल कुमार बेचु, श्रीमती आरीयान ओक्ज़ेनहाम तथा लेखक श्री राज हीरामन

25 जून, 2011 को अपराह्न 1.45 बजे, कात्र बोर्न नगर पालिका टाउन हॉल, कात्र बोर्न, मॉरीशस में प्रसिद्ध मॉरीशसीय साहित्यकार श्री राज हीरामन की पाँच पुस्तकों, **'कथा संवाद'** *(लघुकथा-संग्रह)*, **'घाव करे गम्भीर'** *(लघुकथा-संग्रह)*, **'धरती तले आकाश'** *(कविता-संग्रह)*, **'पराए जो थे अपने हो गए'** *(साक्षात्कार-संग्रह)*, और **'मोहनदास की नज़रों में मॉरीशस भी था'** *(लेख-संग्रह)* का विमोचन समारोह आयोजित किया गया था ।

विशेष अतिथि माननीय अनिल कुमार बेचु, (जी.ओ.एस.के), सार्वजनिक मूल ढांचा, राष्ट्रीय विकास इकाई, भूमि-परिवहन एवं जहाजरानी मंत्री के साथ-साथ सांसद माननीय नीता धीरपालसिंह और कात्र बोर्न नगरपालिका की मेयर श्रीमती आरीयान ओक्ज़ेनहाम ने भी अपनी उपस्थिति से समारोह की गरिमा बढ़ाई ।

यूमन सर्विस ट्रस्ट के सचिव श्री प्रेमचंद बुझावन द्वारा **'मोहनदास की नज़रों में मॉरीशस भी था'** का विमोचन हुआ, श्रीमती आरीयान ओक्ज़ेनहाम ने **'धरती तले आकाश'** का विमोचन किया, माननीय नीता धीरपालसिंह द्वारा **'कथा संवाद'** का विमोचन हुआ तथा माननीय अनिल कुमार बेचु ने **'घाव करे गम्भीर'** और **'पराए जो थे अपने हो गए'** का विमोचन किया ।

इस अवसर पर माननीय अनिल कुमार बेचु ने इस बात की सराहना दी कि मॉरीशस में पहली बार एक लेखक द्वारा एक साथ पाँच हिंदी पुस्तकों का विमोचन हुआ । उन्होंने मॉरीशस में हिंदी साहित्य के क्षेत्र में वृद्धि लाने के लिए हिंदी साहित्यकारों की गतिशीलता को प्रोत्साहन दिया । उन्होंने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक गतिविधियों के आयोजन में सरकार की ओर से और अधिक सहायता प्रदान करने की संभावना पर विचार प्रेरित करने का वचन भी दिया ।

श्रीमती आरीयान ओक्ज़ेनहाम ने अपने वक्तव्य में मॉरीशसीय हिंदी साहित्य के क्षेत्र में हो रही प्रगति की प्रशंसा की तथा इस भाषा में साहित्य सृजन के लिए लेखकों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से नगरपालिका द्वारा आयोजित गतिविधियों का ब्योरा दिया ।

लेखक श्री राज हीरामन ने अपनी रचनाओं का लघु परिचय देते हुए हर्ष के साथ हिंदी साहित्य सृजन के प्रति अपनी कटिबद्धता व्यक्त की । उन्होंने मॉरीशसीय स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं, पं. बासदेव विष्णुदयाल तथा जनाब अब्दुल रज़ाक मोहम्मद के बारे में युवा पीढ़ी को अवगत कराने की आवश्यकता पर बल दिया ।

इस समारोह में श्री रामदेव धुरंधर सहित अनेक वरिष्ठ साहित्यकार, हिंदी प्रचारिणी सभा, विश्व हिंदी सचिवालय, तमिल स्पीकिंग यूनियन, सनातन धर्म टेंपल्स फ़ेदेरेशन के प्रतिनिधि तथा शिक्षण के क्षेत्र से अनेक हिंदी प्रेमी उपस्थित थे ।

लेखक श्री राज हीरामन की सुपुत्री नेहा हीरामन द्वारा भावभीनी धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह की समाप्ति हुई ।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

अंडमान में पत्रिका-विमोचन समारोह एवं संगोष्ठी

अंडमान-निकोबार द्वीप समूह की राजधानी पोर्टब्लेयर में सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था 'चेतना' के तत्वावधान में स्वर्गीय सरस्वती सिंह की 11 वीं पुण्यतिथि पर 26 जून, 2011 को मेगापोड नेस्ट रिसोर्ट में आयोजित एक कार्यक्रम में देहरादून से प्रकाशित 'सरस्वती सुमन' पत्रिका के लघुकथा विशेषांक का विमोचन किया गया। इस अवसर पर ''बदलते दौर में साहित्य के सरोकार'' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में श्री एस.एस. चौधरी, प्रधान वन सचिव, अंडमान-निकोबार द्वीप समूह, देहरादून से पधारे डॉ. आनंद सुमन 'सिंह', प्रधान संपादक- 'सरस्वती-सुमन' एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री कृष्ण कुमार यादव, निदेशक डाक सेवाएँ, अंडमान-निकोबार द्वीप समूह, डॉ. आर.एन.रथ, विभागाध्यक्ष, राजनीति शास्त्र, जवाहरलाल नेहरू राजकीय महाविद्यालय, पोर्टब्लेयर एवं डॉ. जयदेव सिंह, प्राचार्य टैगोर राजकीय शिक्षा महाविद्यालय, पोर्टब्लेयर उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का आरंभ पुण्यतिथि पर स्वर्गीय सरस्वती सिंह के स्मरण और तत्पश्चात उनकी स्मृति में जारी पत्रिका 'सरस्वती सुमन' के लघुकथा विशेषांक के विमोचन से हुआ। इसका अतिथि संपादन चर्चित साहित्यकार और द्वीप समूह के निदेशक डाक सेवा के श्री कृष्ण कुमार यादव द्वारा किया गया । अपने संबोधन में मुख्य अतिथि श्री एस.एस. चौधरी ने कहा कि सामाजिक मूल्यों में लगातार गिरावट के कारण चिंताजनक स्थिति पैदा हो गई है। ऐसे में साहित्यकारों को अपनी लेखनी के माध्यम से जन-जागरण अभियान शुरू करना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज के समय में लघु कथाओं का विशेष महत्व है क्योंकि इस विधा में कम से कम शब्दों के माध्यम से एक बड़े घटनाक्रम को समझने में मदद मिलती है। उन्होंने कहा कि देश-विदेश के 126 लघुकथाकारों की लघुकथाओं और 10 सारगर्भित आलेखों को समेटे 'सरस्वती सुमन' के इस अंक का सुदूर अंडमान से संपादन अपने आप में एक गौरवमयी उपलब्धि मानी जानी चाहिए।

युवा साहित्यकार एवं डाक सेवा के निदेशक श्री कृष्ण कुमार यादव ने बदलते दौर में लघुकथाओं के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि भूमंडलीकरण एवं उपभोक्तावाद के इस दौर में साहित्य को संवेदना के उच्च स्तर पर जीवंत रखते हुए समकालीन समाज के विभिन्न अंतर्विरोधों को अपने आप में समेटकर देखना चाहिए एवं साहित्यकार के सत्य और समाज के सत्य को मानवीय संवेदना की गहराई से भी जोड़ने का प्रयास करना चाहिए।

संगोष्ठी को आगे बढ़ाते हुए डॉ. जयदेव सिंह ने कहा कि साहित्य के क्षेत्र में समग्रता के स्थान पर सीमित सोच के कारण उन विषयों पर लेखन होने लगा है जिनका सामाजिक उत्थान और जन कल्याण से कोई सरोकार नहीं। डॉ. आर. सी. श्रीवास्तव ने इस बात पर चिंता व्यक्त की कि आज बड़े पैमाने पर लेखन हो रहा है लेकिन रचनाकारों के सामने प्रकाशन और पुस्तकों के वितरण की समस्या आज भी मौजूद है। डॉ. आर. एन. रथ ने अंडमान के संदर्भ में भाषाओं और साहित्य की चर्चा करते हुए कहा कि यहाँ हिंदी का एक दूसरा ही रूप उभरकर सामने आया है। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि साहित्य का एक विज्ञान है और यही उसे सुदृढ़ भी बनाता है।

अंडमान से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका 'द्वीप लहरी' के संपादक डॉ. व्यास मणि त्रिपाठी ने साहित्य में उभरते दलित विमर्श, नारी विमर्श, विकलांग विमर्श को केंद्रीय विमर्श से जोड़कर चर्चा की और बदलते दौर में इसकी प्रासंगिकता को रेखांकित किया। उन्होंने साहित्य पर हावी होते बाज़ारवाद की भी चर्चा की। डॉ. संत प्रसाद राय ने कहा कि समाज और साहित्य एक सिक्के के दो पहलू हैं और इनमें से यदि किसी एक पर भी संकट आता है तो दूसरा उससे अछूता नहीं रह सकता।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. आनंद सुमन सिंह ने 'सरस्वती सुमन' पत्रिका के लघुकथा विशेषांक के सुंदर संपादन के लिए श्री कृष्ण कुमार यादव को बधाई देते हुए कहा कि कभी 'काला-पानी' कही जाने वाली यह धरती क्रांतिकारी साहित्य को अपने में समेटे हुए है, ऐसे में 'सरस्वती सुमन' पत्रिका भविष्य में अंडमान-निकोबार पर एक विशेषांक केंद्रित कर उसमें एक आहुति देने का प्रयास करेगी। उन्होंने रचनाकारों से अपील की कि वे सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को ध्यान में रखकर स्वस्थ समाज के निर्माण में अपनी रचनात्मक भूमिका निभाएँ। इस अवसर पर डॉ. सिंह ने द्वीप समूह में साहित्यिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए और स्व. सरस्वती सिंह की स्मृति में पुस्तकालय खोलने हेतु अपनी ओर से हर संभव सहयोग देने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम का संचालन अशोक कुमार सिंह ने किया और आई. ए. खान ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर विभिन्न द्वीपों से आए समस्त साहित्यकार, पत्रकार व बुद्धिजीवी उपस्थित थे।

पोर्टब्लेयर से दुर्गा विजय सिंह दीप की रिपोर्ट
सृजनगाथा से साभार

विश्व हिंदी पत्रिका का 2010 विशेषांक हस्तगत हुआ। आभारी हूँ।

इस अंक में देश-विदेश में हिंदी सेवियों ने अपने-अपने देश में हो रही हिंदी कि गतिविधियों की जानकारी दी है। पढ़कर अच्छा लगा कि विश्व में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में विद्वान लगे हुए हैं। हर्ष का विषय है कि विदेशी भी हिंदी भाषा न केवल सीख रहे हैं बल्कि इस भाषा की सेवा में कार्यरत भी हैं।

इस अंक की विशेष ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में विश्व हिंदी दिवस पर दिए गए दो भाषण तथा अन्य संस्मरण हैं जो संजोने और यथास्थान संदर्भित करने योग्य हैं। कोई भी भाषा तब तक जीवित रहती है जब तक उसके बोलने, पढ़ने और लिखने वाले हैं। इसलिए यह कहा जा सकता है कि हिंदी को कहीं से भी कोई खतरा नहीं है। रही बात संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाने की, तो यह वित्तीय समस्या अधिक है।

नारायण कुमार ने हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने के विविध पक्षों पर पूर्ण प्रकाश डाला है। जैसा कि उन्होंने कहा कि "हम जानते हैं कि विश्व-शांति के लिए कार्यरत संयुक्त राष्ट्रसंघ का उद्देश्य संसार भर के लोगों के बीच सद्भावना और मैत्री कायम करना है। हिंदी विश्व-शांति, सद्भावना और समन्वय की भाषा है..."। बालकवि बैरागी ने भी हिंदी को धैर्य की भाषा कहा है, उत्तेजना और हिंसा की नहीं। तो आशा और धैर्य इसे किसी न किसी दिन संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषा भी बना देगा।

एक सुंदर, स्वच्छ एवं सार्थक बृहद अंक निकालने के लिए विश्व हिंदी सचिवालय बधाई के पात्र है।

चंद्र मौलेश्वर, भारत

आदरणीय भाई गंगाधरसिंह सुखलाल जी,
सादर नमन।
विश्व हिंदी समाचार का मार्च अंक हस्तगत हुआ। धन्यवाद।
इस अंक से पता चला कि भाई राजेंद्र प्रसाद मिश्र जी का कार्यकाल समाप्त हो गया और आपने उनकी ज़िम्मेदारी संभाल ली है। उनका योगदान सदा याद रहेगा। नए पदभार के लिए आप बधाई स्वीकारें।
यह अंक विश्व हिंदी दिवस को समर्पित किया गया है जिसमें भारत के प्रधानमंत्री की शुभकामनाओं के साथ मॉरीशस में इस समारोह की रिपोर्ट भी दर्ज है। महामहिम सर अनिरुद्ध जगन्नाथ जी ने सही कहा है कि भाषा के माध्यम से ही हम अपनी संस्कृति और इतिहास को बचा सकते हैं। विश्व भर में इस दिवस के कार्यक्रमों की जानकारी मिली।
संपादकीय में हॉटल के कर्मचारी का वर्णन अच्छा लगा। कर्मचारी का प्रसन्न होना स्वाभाविक है क्योंकि कोई भी व्यक्ति अपनी मातृभाषा को सुनकर विश्व के किसी भी कोने में रहकर भी अपनी मातृभाषा से क्षण भर के लिए ही सही, अपने को जोड़ लेता है। यह भाषा का चमत्कार ही तो है!
विश्व हिंदी समाचार परिवार को तीन वर्ष की सफ़ल यात्रा पूर्ण करने के लिए बधाई एवं भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

चंद्र मौलेश्वर, भारत

12 मई, 2011

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित विश्व हिंदी समाचार त्रैमासिक पत्रिका का मार्च, 2011 का अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद। पत्रिका अपने आप में अनूठी तो है ही इसकी सामग्री पठनीय तथा बहुत उपयोगी है। इस पत्रिका से विभिन्न देशों में हो रही गतिविधियों की जानकारी प्राप्त होती है तथा हिंदी के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की झलक मिलती है। पत्रिका के कुशल संपादन के लिए मेरी बधाई स्वीकार करें।

भवदीय,
सविता अजमानी
वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी (राजभाषा)

श्रद्धांजलि

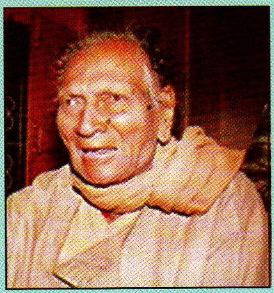

आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री नहीं रहे

हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार और वयोवृद्ध कवि आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री का हृदय गति रुक जाने से बृहस्पतिवार 7 अप्रैल की रात को बिहार के मुज़फ्फरपुर ज़िले में निधन हो गया। वे 96 वर्ष के थे। वयोवृद्ध कवि के करीबी लोगों ने बताया कि शास्त्री जी लंबे समय से बीमार थे। उनके परिवार में पत्नी छाया देवी और एक पुत्री है। उन्होंने बताया कि आचार्य शास्त्री जी ने मुज़फ्फरपुर स्थित अपने आवास 'निराला निकेतन' में अंतिम सांस ली। बिहार सरकार ने आचार्य शास्त्री को राजेंद्र शिखर सम्मान और उत्तर प्रदेश सरकार ने भारत भारती सम्मान प्रदान किया था। आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री पर निराला का इतना प्रभाव था कि उन्होंने जब मुज़फ्फरपुर को अपना स्थायी निवास बनाया तो घर का नाम रखा 'निराला निकेतन'। आचार्य जी सुमित्रानंदन पंत जी की तरह सच्चे प्रकृति-प्रेमी थे और निराला की तरह मानवता से ओत-प्रोत थे। निराला निकेतन में उनके साथ रहने वाले बिल्ली, कुत्ते, गाय, खरगोश सभी आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री जी के परिवार के सदस्य की तरह थे। उनकी विधिवत शिक्षा-दीक्षा तो संस्कृत में ही हुई थी लेकिन अपने श्रम से उन्होंने अंग्रेज़ी और बांगला का प्रभूत ज्ञान प्राप्त किया। शास्त्री जी ने कई उपन्यास, कहानियाँ, काव्यनाटक, आत्मकथा, संस्मरण, आलोचनाएँ तथा गद्य पुस्तकें लिखी हैं। 'छाया' उनकी प्रसिद्ध रचना है। 'रूप-अरूप', 'तीर-तरंग', 'मेघगीत', 'तमाशा', आदि कई पुस्तकें काफ़ी लोकप्रिय हुईं। उनका उपन्यास 'कालिदास' भी बृहत् है। शास्त्री जी का संपूर्ण जीवन साहित्य रचना को समर्पित था। सभी हिंदी प्रेमियों की ओर से आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री को श्रद्धांजलि।

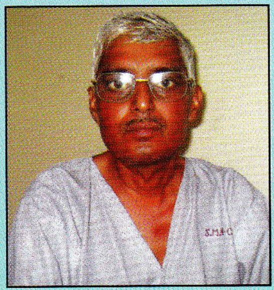

लघुकथाकार कालीचरण प्रेमी नहीं रहे

गाज़ियाबाद। प्रसिद्ध लघुकथाकार कालीचरण प्रेमी जी का विगत 25 अप्रैल को गाज़ियाबाद में निधन हो गया। वे पिछले कई वर्षों से ब्लड कैंसर से जूझ रहे थे। साहित्यिक पत्रकारिता और लेखन में समान रूप से सक्रिय कालीचरण प्रेमी जी के 'कीलें', 'अँधा मोड़' जैसे कई लघुकथा संग्रह प्रकाशित हुए हैं, जिन्हें पाठकों के मध्य विशेष प्रशंसा मिली। इसके अतिरिक्त वे कई पत्रिकाओं के साहित्यिक विशेषांकों का संपादन भी कर चुके थे। वर्तमान में वे भारतीय डाक तार विभाग में कवि नगर, गाज़ियाबाद में कार्यरत थे। एक विनम्र व्यक्तित्व और सजग रचनाकार के रूप में श्री कालीचरण प्रेमी जी को साहित्य जगत सदैव याद रखेगा। सभी हिंदी प्रेमियों की ओर से श्री कालीचरण प्रेमी जी को श्रद्धांजलि।

जम्मू में 'अनंत की ओर' का लोकार्पण

अमेरिका में रह रही अग्रिम पंक्ति की कवयित्री शशि पाधा के काव्य संग्रह 'अनंत की ओर' का विमोचन बुधवार को 'के एल सहगल' हॉल में हुआ। कार्यक्रम में जम्मू यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो.वरुण साहनी मुख्य अतिथि थे। युवा हिंदी लेखक संघ के अध्यक्ष श्री अशोक कुमार ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की। स्वागत भाषण 'युहिले' के प्रधान श्री शेख मोहम्मद कल्याण ने दिया।

ध्यान देने योग्य बात है कि यह शशि पाधा का तीसरा संग्रह है। इससे पहले इनके दो कविता संग्रह 'मानस मंथन' एवं 'पहली किरण' प्रकाशित हो चुके हैं। इस संग्रह में प्रकृति एवं प्रेम का संवेदनशील संगम है जिसमें हमें कवयित्री के अंतर्संसार के दर्शन हुए हैं। मुख्यत: गीतों की रचना करने वाली कवयित्री ने इस संग्रह के द्वारा दोहों तथा नवगीतों की दुनिया में भी प्रवेश किया है। शशि पाधा ने अमेरिका के नॉर्थ केरोलिना यूनिवर्सिटी एट चैपल हिल में हिंदी भाषा का अध्यापन कार्य किया। वर्ष 2007 में इन्होंने न्यूयार्क में आयोजित 8वें विश्व हिंदी

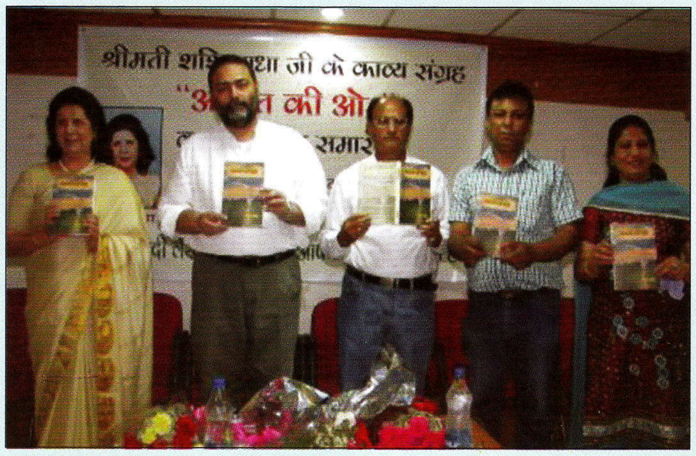

सम्मेलन में भाग लिया। शशि जी अंतर्राष्ट्रीय विश्व हिंदी समिति तथा विश्व हिंदी न्यास संस्थाओं के सांस्कृतिक कार्यक्रमों से जुड़ी हुई हैं। इस समारोह में कुलपति प्रो.वरुण साहनी ने कहा कि अमेरिका में रहते हुए शशि पाधा ने हिंदी साहित्य की यात्रा को आगे बढ़ाकर अत्यंत सराहनीय कार्य किया है तथा उनकी पुस्तक में देश-प्रेम और परदेस में रहने की पीड़ा की झलक मिलती है। शशि ने संक्षेप मे इस पुस्तक से जुड़े अपने अनुभव सब के साथ साझा किया और संग्रह में छपी कुछ रचनाओं का पाठ किया। उन्होंने प्रकाशन में सहयोग देने वाले मानवी प्रकाशन के श्री इंदु भूषण को आभार व्यक्त करते हुए सभागार में उपस्थित सभी साहित्यकारों को धन्यवाद समर्पित किया।

कार्यक्रम के अंत में संगीत का कार्यक्रम हुआ जिसमें जम्मू के जाने-माने गायक श्री शाम साजन ने उनकी दो रचनाओं को संगीतबद्ध कर पेश किया तथा सुश्री प्रतिभा शर्मा ने भी सुंदर गीत की प्रस्तुति की। इस कार्यक्रम में जम्मू विश्व विद्यालय के शिक्षक, हिंदी साहित्यकार तथा रेडियो/दूरदर्शन से जुड़े गणमान्य लोग उपस्थित थे। आमंत्रित मेहमानों का धन्यवाद उपसचिव डॉ पवन कुमार ने किया।

शेख मोहम्मद
सृजनगाथा

नॉर्थ कैरोलिना विश्वविद्यालय में 'कौन सी ज़मीन अपनी' का विमोचन

हिंदी जगत की जानी-मानी कवयित्री, कहानीकार, पत्रकार, रेडियो, टीवी तथा रंगमंच की कलाकार सुधा ओम ढींगरा के कहानी संग्रह 'कौन सी ज़मीन अपनी' का विमोचन यूनिवर्सिटी ऑफ़ नॉथ कैरोलिना के तत्वावधान में प्रो.अफ़रोज़ ताज द्वारा आयोजित समारोह में संपन्न हुआ। सभा का आरंभ श्री जान काल्डवेल की स्वागत पंक्तियों और हिंदी विकास मंडल की अध्यक्षा श्रीमती सरोज शर्मा के आशीर्वाद से हुआ। डॉ.अफ़रोज़ ताज ने सुधा ओम ढींगरा की कृतियों पर चर्चा करते हुए उनकी सीधी सरल भाषा में कहानियाँ लिखने के अंदाज़ की बहुत प्रशंसा की। उन्होंने यह भी कहा कि कहीं भी ऐसा नहीं लगता कि वे भारत से इतनी दूर बैठी लिख रही हैं। उनकी कहानियों में आधुनिकता के साथ-साथ परंपरावाद भी है। जहाँ एक ओर पंजाब के किसानों की बात करती हैं तो दूसरी ओर अमेरिका के अत्याधुनिक परिवेश का चित्रण भी करती हैं। इस समारोह में हिंदी-उर्दू जगत के कई विशिष्ट व्यक्तित्व शामिल हुए जिन्होंने न केवल अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की बल्कि 'कौन सी ज़मीन अपनी' की बहुत सराहना की। प्रो.अफ़रोज़ ने कहा कि सुधा जी की रचनाएँ अमेरिका की कई युनिवर्सिटी के हिंदी कोर्स में पढ़ाई जाती हैं तथा इनकी कृतियाँ भारत में भी हिंदी कोर्स में शामिल होनी चाहिए। रमेश शौनक ने सुधा जी की कहानियों को 'समाज की जमी हुई सिल को तोड़ती कहानियाँ' बताया और बिंदु सिंह ने 'कौन सी ज़मीन अपनी' के नारी पात्रों पर चर्चा की। उनके अनुसार सुधा जी की कहानियों के नारी पात्र चुप रह कर प्रतिवाद करती हैं, शोर-शराबा नहीं करतीं। इनकी कहानियों की नारियाँ कभी भी अपनी परंपराओं को नहीं भूलतीं, जो गलत है उसका प्रतिरोध करते हुए अपने आप को सक्षम और सशक्त बनाती हैं। श्रीमती सीमा फ़ारुखी ने कहा कि इन की कहानियाँ हमारी आम ज़िन्दगी से बहुत जुड़ी हुई हैं। श्रीमती उषा देव ने पंकज सुबीर और अदिति मजूमदार ने अखिलेश शुक्ल की 'कौन सी ज़मीन अपनी' पर लिखी समीक्षाएँ पढ़ीं। अंत में सुधा जी की 'एग्ज़िट' कहानी का उन्हीं के द्वारा पाठ हुआ। रंगमंच और रेडियो से जुड़े होने के कारण उनके कहानी पढ़ने के अंदाज़ से लोग मंत्र-मुग्ध हो गए।

अदिति मजूमदार (यू.एस.ए)

हिंदी भाषा भारत की क्षेत्रीय भाषाओं की मुक्तामाला में 'गुरुदेव' के शब्दों में, 'मध्यमणि' के रूप में महिमा मंडित है । यह भाषा राष्ट्रीय ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर भी अभिव्यक्ति की सुमधुर व सुप्रभावी संवाहिनी है । इसका सुवास व लावण्य विश्वव्यापी होगा, ऐसा मेरा विश्वास है ।

वीणा उपाध्याय
सचिव, राजभाषा विभाग, भारत सरकार,